अपनाघर दुनिया का सबसे बड़ा महिला निराश्रित आश्रय गृह, बना गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

राजेश खण्डेलवाल, भरतपुर। मानव सेवा के क्षेत्र में भरतपुर का अपना घर आश्रम गुरुवार को दुनिया के सबसे बड़े महिला निराश्रित आश्रय गृह के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल हुआ। यह उपलब्धि 3295 निराश्रित एवं असहाय महिलाओं को सम्मानपूर्वक आश्रय, उपचार और देखभाल उपलब्ध कराने के आधार पर मिली।

आश्रम संस्थापक डॉ बीएम भारद्वाज ने बताया कि गुरुवार को रिकॉर्ड प्रयास के दौरान गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा नियुक्त निर्णायक अधिकारी ऋषि नाथ की मौजूदगी में संपूर्ण प्रक्रिया का सत्यापन किया गया। पूरे आयोजन की आधिकारिक वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी और दस्तावेजी साक्ष्यों का संकलन किया। साथ ही गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के निर्धारित दिशा-निर्देशों और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार सभी तथ्यों और व्यवस्थाओं की जांच की गई। डॉ. भारद्वाज ने कहा कि यह सम्मान किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि सेवा का सम्मान है। दुनिया में अमेरिका और जापान सहित कई देशों में इस तरह के होम हैं, लेकिन महिलाओं के लिए इससे बड़ा आश्रय गृह कहीं नहीं मिला। आश्रम की आवास व्यवस्था, मेडिकल सुविधाएं, हाइजीन, क्लीनिक, भोजन और केयर सिस्टम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर पाया गया।

9 लाख वर्गफुट में बना है आश्रम- प्रति महिला 126 वर्ग फुट स्थान उपलब्ध कराने की जानकारी देते हुए डॉ. भारद्वाज ने बताया कि करीब छह महीने से गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के साथ प्रक्रिया चल रही थी और इस दौरान लगभग 200 ई-मेल के माध्यम से विभिन्न जानकारियां साझा की गईं। आश्रम का निर्माण लगभग 9 लाख वर्गफुट क्षेत्र में किया है तथा प्रत्येक महिला को अंतरराष्ट्रीय मानकों से अधिक करीब 126 वर्गफुट स्थान उपलब्ध कराया है।

अभी रह रहे 6875 प्रभुजन- डॉ. भारद्वाज ने बताया कि 25 वर्ष पहले इस संकल्प के साथ अपना घर की शुरुआत हुई थी कि कोई भी असहाय, निराश्रित और बीमार व्यक्ति संसाधनों के अभाव में दम न तोड़े। आज देशभर में अपना घर के 71 आश्रम संचालित हैं, जबकि एक आश्रम नेपाल के काठमांडू में भी चल रहा है। भरतपुर आश्रम में वर्तमान में 6875 प्रभुजन रह रहे हैं, जिनमें 3295 महिलाएं शामिल हैं।

दुनिया में सबसे बड़ा सेवा एवं आश्रय केंद्र- डॉ. भारद्वाज ने कहा कि यह केवल भरतपुर या राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए गौरव का क्षण है, अब दुनिया में महिलाओं के सबसे बड़े सेवा एवं आश्रय केंद्र के रूप में अपना घर भरतपुर का नाम हमेशा के लिए दर्ज हो गया है। यह उपलब्धि पूज्य कृपा, सेवा साथियों और वर्षों से संस्था के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाले सहयोगियों के समर्पण का परिणाम है। रिकॉर्ड घोषणा के बाद आश्रम परिसर में खुशी का माहौल रहा। संस्था पदाधिकारियों, सेवा साथियों और उपस्थित लोगों ने इस उपलब्धि को मानव सेवा की बड़ी जीत बताया। भरतपुर में गुरुवार को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के नियुक्त निर्णायक ऋषि नाथ से प्रमाण पत्र प्राप्त करतीं अपनाघर की संस्थापिका डॉ माधुरी भारद्वाज।

कलेक्टर डॉ. अरुण गर्ग देश के टॉप 100 डीएम में शामिल

नई दिल्ली। राजस्थान के झुंझुनूं जिले के लिए गौरव का क्षण उस समय आया जब फेम इंडिया एवं एशिया पोस्ट द्वारा जारी राष्ट्रीय सर्वेक्षण में जिला कलेक्टर डॉ. अरुण गर्ग को देश के प्रतिष्ठित ‘टॉप 100 डीएम/कलेक्टर्स’ की सूची में शामिल किया गया। यह सम्मान उन्हें जिले में उत्कृष्ट प्रशासन, नवाचार आधारित कार्यशैली, जनसंवेदनशील निर्णयों तथा प्रभावी नेतृत्व के लिए प्रदान किया गया है। सर्वे के अनुसार देशभर के लगभग 800 जिलों में कार्यरत जिलाधिकारियों एवं जिला मजिस्ट्रेटों के कार्यों का विस्तृत मूल्यांकन कर तैयार की गई इस सूची में उन्हीं अधिकारियों को स्थान दिया गया, जिन्होंने सुशासन, विकास एवं जनहित के क्षेत्र में उल्लेखनीय

योगदान दिया है। सर्वेक्षण के दौरान प्रशासनिक दक्षता, प्रभावी गवर्नेंस, दूरदर्शी सोच, नवाचार, त्वरित निर्णय क्षमता, संकट प्रबंधन, जवाबदेही, व्यवहार कुशलता, जनसंपर्क तथा विकासोन्मुख कार्यशैली सहित 10 महत्वपूर्ण मानकों पर अधिकारियों का आकलन किया गया। विशेषज्ञों की राय, ग्राउंड रिपोर्ट्स एवं मीडिया विश्लेषण के आधार पर चयनित अधिकारियों में डॉ. अरुण गर्ग का नाम शामिल होना झुंझुनूं जिले की प्रशासनिक उपलब्धियों को राष्ट्रीय पहचान मिलने के रूप में देखा जा रहा है। फेम इंडिया मैगजीन एवं एशिया पोस्ट द्वारा वर्ष 2011 से लगातार यह प्रतिष्ठित वर्ष आयोजित किया जा रहा है, जिसे देश के सबसे विश्वसनीय प्रशासनिक आकलनों में गिना जाता है। डॉ. अरुण गर्ग की इस उपलब्धि पर जिले में खुशी की लहर है। विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं जनप्रतिनिधि संगठनों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे झुंझुनूं जिले के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया है।

31 मई 1893 भारत के आत्मगौरव और स्वामी विवेकानंद की ऐतिहासिक यात्रा

भारत के इतिहास में कुछ तिथियाँ केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं होतीं,वे राष्ट्र की चेतना में अमिट स्मृति बन जाती हैं। 31 मई 1893 ऐसी ही एक तिथि है। यह वह दिन था जब भारतभूमि का एक युवा संन्यासी,साधारण गेरुआ वेशभूषा में,सीमित संसाधनों के साथ,परंतु असीम आत्मविश्वास और अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति को अपने भीतर समेटे हुए,भारतभूमि से विश्व मंच की ओर प्रस्थान कर रहा था। वह कोई राजा नहीं था,न किसी साम्राज्य का दूत और न ही किसी राजनीतिक शक्ति का प्रतिनिधि। वह भारत की आत्मा का वाहक था। वह थे स्वामी विवेकानंद। उस समय भारत अंग्रेज़ी दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। चारों ओर निराशा,हीनभावना और सांस्कृतिक असुरक्षा का वातावरण था। पश्चिमी सभ्यता की चमक के सामने भारतीय समाज अपनी ही परंपराओं पर प्रश्नचिह्न लगाने लगा था।भारत की आध्यात्मिक धरोहर,उसके वेद,उपनिषद,दर्शन और सनातन संस्कृति को पिछड़ेपन का प्रतीक बताने का प्रयास किया जा रहा था।ऐसे कठिन समय में एक युवा संन्यासी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ यह घोषणा की कि भारत केवल एक भूखंड नहीं,बल्कि विश्व को दिशा देने वाली आध्यात्मिक चेतना है।

अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण उनके लिए केवल एक अवसर नहीं था,बल्कि भारत की प्रतिष्ठा का प्रश्न था।%किंतु यह यात्रा किसी भी दृष्टि से सरल नहीं थी।%उनके पास पर्याप्त धन नहीं और न ही कोई बड़ा संगठन उनके साथ,यात्रा की व्यवस्थाएँ अनिश्चित थीं। समुद्री यात्रा लंबी और कठिन थी। फिर भी उनके भीतर एक अदृश्य शक्ति कार्य कर रही थी,अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस की प्रेरणा और भारतमाता की पुकार। 31 मई 1893 की वह सुबह भारतीय इतिहास की सबसे भावनात्मक सुबहों में से एक कही जा सकती है। जब स्वामी विवेकानंद ने भारत से प्रस्थान किया,तब उनके मन में केवल एक संकल्प था–विश्व को भारत की आत्मा से परिचित कराना। कहा जाता है कि उस समय उनकी आँखों में करुणा भी थी और तेज भी। वे जानते थे कि वे किसी व्यक्तिगत उपलब्धि के लिए नहीं जा रहे,बल्कि करोड़ों भारतीयों की मौन आकांक्षाओं को अपने साथ लेकर चल रहे हैं। बंदरगाह पर खड़े लोग शायद यह सोच भी नहीं सकते थे कि यह साधारण-सा दिखने वाला संन्यासी आने वाले समय में भारत के गौरव को विश्व के शिखर तक पहुँचा देगा। उस क्षण भारत की सांस्कृतिक चेतना समुद्र के रास्ते विश्व की ओर यात्रा कर रही थी। यह केवल शरीर की यात्रा नहीं थी,यह भारतीय आत्मविश्वास की यात्रा थी। यह उस सभ्यता का प्रस्थान था जिसने हजारों वर्षों से विश्व को सहिष्णुता,मानवता और आध्यात्मिकता का संदेश दिया था। स्वामीजी के पास धन की कमी थी,पर विचारों की समृद्धि अपार थी। उनके पास भौतिक साधन सीमित थे,पर आत्मबल असीम था। स्वामी विवेकानंद की विदेश यात्रा जाने की योजना में कितने शिष्यों तथा अनेक शुभचिंतकों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। विशेष रूप से चेन्नई के भक्तों और राजस्थान के खेतड़ी राज्य के राजा अजीत सिंह जी जो कि स्वामी जी के परम भक्त और समर्थक थे,ने आर्थिक सहायता की। स्वामी विवेकानंद ने मुंबई से अपनी ऐतिहासिक समुद्री यात्रा प्रारंभ की वे जापान,चीन,और कनाडा होते हुए अमेरिका पहुँचे किंतु विदेशी भूमि पर रहने और सम्मेलन तक पहुँचने के लिए वह एकत्रित किया गया धन पर्याप्त नहीं था। फिर भी उन्होंने कठिनाइयों को अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने दिया। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य वर्ष 1893 में अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेना था। वहाँ वे भारतीय संस्कृति,सनातन धर्म और वेदांत दर्शन का प्रचार करना चाहते थे। यात्रा के दौरान वे पहले कनाडा के वेंकूवर पहुँचे। इसके बाद उन्होंने रेलमार्ग से यात्रा की और 30 जुलाई 1893 को शिकागो पहुँचे।बाद में विश्व धर्म सम्मेलन में दिए गए उनके प्रेरणादायक भाषण ने संपूर्ण विश्व को भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता से परिचित कराया।उनके जीवन का यही सबसे बड़ा संदेश है कि जब उद्देश्य महान हो,तब अभाव भी व्यक्ति को रोक नहीं सकते। समुद्र के लंबे सफर के दौरान शायद अनेक बार उनके मन में भारत की छवि उभरती होगी,गरीब किसान,संघर्षरत युवा,दीन-हीन जनता और वह प्राचीन संस्कृति,जो अपनी असली पहचान के लिए व्याकुल थी। वे जानते थे कि यदि विश्व भारत को सम्मान देगा,तो भारत स्वयं भी अपने प्रति सम्मान अनुभव करेगा। इसलिए उनकी यात्रा केवल शिकागो तक पहुँचने की यात्रा नहीं थी,वह भारत को आत्मगौरव लौटाने की यात्रा थी।शिकागो पहुँचने के बाद भी संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। सम्मेलन में भाग लेने के लिए आवश्यक औपचारिकताएँ,परिचय-पत्रों का अभाव और आर्थिक संकट उनके सामने दीवार बनकर खड़े थे। कई दिनों तक उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। (उन्हें कई दिनों तक भूखा भी रहना पड़) परंतु वे विचलित नहीं हुए। उनके भीतर यह अटूट विश्वास था कि वे सत्य व मानवता के संदेशवाहक हैं,और सत्य का मार्ग अंततः स्वयं बन जाता है।

वास्तव में,31 मई 1893 को आरंभ हुई वह यात्रा केवल शिकागो तक नहीं अपितु वह करोड़ों भारतीयों के हृदय तक पहुँची। उसने गुलाम भारत में आत्मविश्वास का दीप प्रज्वलित किया,युवाओं को यह विश्वास दिलाया कि भारत की संस्कृति विश्व को दिशा दे सकती है। यही कारण है कि स्वामी विवेकानंद केवल एक धार्मिक व्यक्तित्व नहीं,बल्कि राष्ट्रीय चेतना के प्रेरणास्रोत बन गए। आज जब भारत विश्व पटल पर अपनी नई पहचान बना रहा है, तब 31 मई 1893 की वह यात्रा हमें पुनः स्मरण कराती है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी आत्मा में होती है। स्वामी विवेकानंदजी ने जिस भारत का स्वप्न देखा था,वह आत्मविश्वास,संस्कारित,सहिष्णु और मानवता के लिए समर्पित भारत था। इसलिए 31 मई केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं,बल्कि भारत की आत्मा के विश्व की ओर प्रस्थान का दिवस है। यह

वह क्षण था जब एक युवा संन्यासी ने समुद्र पार करते हुए भारत के गौरव को विश्व के शिखर तक पहुँचाने का संकल्प लिया और उसे पूर्ण भी किया। आज भी जब हम स्वामी विवेकानंदजी को स्मरण करते हैं,तब उनके साथ वह ऐतिहासिक यात्रा भी हमारी स्मृतियों में जीवित हो उठती है,एक ऐसी यात्रा,जिसने भारत को स्वयं अपनी शक्ति का बोध कराया।

अमित राव पवार,देवास (म.प्र.)

सोशल मीडिया पर बहस के बीच neOwn बच्चों को फिर किताबों से जोड़ रहा है

16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक लगाने के ऑस्ट्रेलिया के फैसले ने पूरी दुनिया में बच्चों, डिजिटल सेहत और ज्यादा स्क्रीन देखने के लंबे समय के असर पर नई चर्चा शुरू कर दी है। अब कई देश भी ऐसे नियमों पर विचार कर रहे हैं। धीरे-धीरे यह बहस सिर्फ इस बात तक सीमित नहीं रह गई है कि बच्चों को ऑनलाइन कम समय बिताना चाहिए, बल्कि अब एक और महत्वपूर्ण सवाल उठ रहा है कि उनकी जिंदगी में इसकी जगह कौन-सी अच्छी और स्वस्थ आदतें लेनी चाहिए?

भारत का टेक्नोलॉजी से जुड़ा और ऐप आधारित बच्चों की किताबें किराए पर देने वाला प्लेटफॉर्म neOwn मानता है कि इसका जवाब ऐसे अनुभव बनाने में है, जो बच्चों को स्क्रीन से थोड़ा दूर रखते हुए उनका ध्यान, कल्पना और जिज्ञासा बढ़ाएं, साथ ही छोटी उम्र से पढ़ने की आदत भी विकसित करें। आज जब पूरी दुनिया में सोशल मीडिया की लत और बच्चों की कम होती ध्यान क्षमता पर चर्चा बढ़ रही है, तब टुहह्ठ्ठ पढ़ने को सिर्फ पढ़ाई की आदत नहीं, बल्कि बच्चों में बचपन से ही बेहतर ध्यान और रचनात्मक सोच विकसित करने का तरीका मानता है। neOwn इस समस्या का हल सिर्फ टेक्नोलॉजी से दूरी बनाना नहीं मानता। कंपनी का मानना है कि बच्चों के लिए ऐसे बेहतर विकल्प तैयार किए जाएं, जिन्हें वे सच में पसंद करें और जिनका आनंद लें। ब्रांड का विश्वास है कि लंबे समय तक अच्छे बदलाव

सिर्फ रोक लगाने से नहीं आते, बल्कि तब आते हैं जब बच्चों को ऐसे अनुभव मिलते हैं जो उन्हें स्वाभाविक रूप से खुशी, शांति और सीखने का एहसास दें। बच्चों में पढ़ने की आदत बढ़ाने के लिए neOwn सिर्फ अपनी सेवाएं ही नहीं दे रहा, बल्कि वह नियमित रूप से सामूहिक साइलेंट रीडिंग सेशन भी आयोजित कर रहा है। ये ऐसे खास अनुभव होते हैं जहां बच्चे स्क्रीन से दूर होकर शांत और बिना किसी ध्यान भटकाने वाले माहौल में किताबों के साथ समय बिताते हैं। इन सेशन्स में बच्चे अपनी पसंद की किताबें लेकर आते हैं और साथ बैठकर चुपचाप पढ़ते हैं। इससे ऐसा माहौल बनता है जो बच्चों का ध्यान बढ़ाने के साथ-साथ पढ़ने को मजेदार और सामाजिक अनुभव भी बना देता है। इन सत्रों के दौरान बच्चों के लिए छोटे-छोटे सरप्राइज और हल्की-फुल्की गतिविधियां भी रखी जाती हैं, ताकि यह अनुभव और ज्यादा रोचक और यादगार बन सके।

इन साइलेंट रीडिंग सेशन्स का असर अब बच्चों और उनके माता-पिता के अनुभवों में साफ दिखाई देने लगा है। एक माता-पिता ने कहा, मेरी बेटी घर पर 10 मिनट से ज्यादा किताब लेकर शांत नहीं बैठती थी। लेकिन जब मैंने उसे दूसरे बच्चों के साथ लगातार 30 मिनट तक पढ़ते देखा, तब मुझे समझ आया कि समस्या उसकी ध्यान लगाने की क्षमता नहीं है, बल्कि उसे सही माहौल देने की जरूरत है। कई बच्चों के लिए ये सेशन प्रेरणा और अपनापन महसूस करने की जगह भी बन रहे हैं। 9 साल की एक बच्ची ने कहा, मुझे नहीं पता था कि इतने सारे बच्चों को पढ़ना इतना पसंद है। मुझे लगता था सिर्फ मुझे ही अच्छा लगता है। अब मुझे महसूस होता है कि मैं अकेली नहीं हूं। 11 साल के एक बच्चे ने बताया कि इस अनुभव ने उसके अंदर रचनात्मक आत्मविश्वास बढ़ाया। उसने कहा,जब मैंने अपनी उम्र के बच्चों को सच में किताबें लिखते देखा, तब मुझे लगा कि मैं भी ऐसा कर सकता हूं। मैं अपनी नोटबुक में कहानियां लिखता हूं, लेकिन मुझे लगता था कि किसी को उनमें दिलचस्पी नहीं होगी। अब मैं अपनी कहानी पूरी करना चाहता हूं और लोगों को दिखाना चाहता हूं।

मशहूर उर्दू शायर बशीर बद्र का निधन

रूपेश कुमार की रिपोर्ट (सीवान, बिहार) = - मशहूर उर्दू शायर बशीर बद्र का आज 28 मई 2026 को 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने भोपाल स्थित अपने निवास पर अंतिम सांस ली। वे लंबे समय से अस्वस्थ थे और डिमेंशिया जैसी बीमारी से जूझ रहे थे। उनके निधन की खबर से साहित्य और शायरी जगत में शोक की लहर दौड़ गई है।बशीर बद्र का जन्म 19 फरवरी 1935 को अयोध्या, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और उर्दू साहित्य की दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई। उनकी शायरी में प्रेम, विरह, अकेलापन और इंसानी रिश्तों की गहरी संवेदनाएं देखने को मिलती थीं। वर्ष 1987 के मेरठ दंगों में उनका घर जल गया था, जिसके बाद वे भोपाल आकर बस गए। इस दर्दनाक घटना ने उनकी रचनाओं को और अधिक

भावनात्मक तथा संवेदनशील बना दिया। उनकी ग़ज़लों में दर्द, मोहब्बत और जीवन की सच्चाइयों का अनूठा संगम दिखाई देता था। बशीर बद्र अपनी रोमांटिक और दिल को छू लेने वाली ग़ज़लों के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध थे। ‘कोई हाथ भी न मिलाएगा’ और ‘उजाले अपनी यादों के’ जैसे उनके शेर आज भी लोगों की जुबान पर हैं और साहित्य प्रेमियों के दिलों में खास स्थान रखते हैं। साहित्य और उर्दू शायरी में उनके अमूल्य योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री सम्मान से भी नवाजा था। बशीर बद्र का निधन उर्दू साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति माना जा रहा है। उनकी ग़ज़लें और शेर आने वाली पीढ़ियों के दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे। इनके निधन से साहित्यिक जगत में शोक की लहर है। चैनपुर के युवा लेखक रूपेश कुमार, राष्ट्रीय साहित्य नवरत्न मंच की संस्थापक मुंबई की लेखिका डॉ. अनामिका दूबे, लखनऊ स्थित निहारिका साहित्य मंच कंट्री ऑफ इंडिया की संस्थापक एवं लेखिका डॉ. रीमा सिन्हा, अनूपपुर (मध्य प्रदेश) की कवयित्री सरिता श्रीवास्तव, अहमदाबाद की कवयित्री सपना जैन तथा पटना महिला मोर्चा की अध्यक्ष रूपा कुमारी, मधुबनी की युवा लेखिका शारदा झा सहित अनेक बुद्धिजीवी साहित्यकारों ने गहरा दुख व्यक्त किया है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी को सरदार एस पी सिंह ने दी ईद की बधाई

नई दिल्ली। अल्पसंख्यक आयोग उत्तर प्रदेश के पूर्व सदस्य व भाजपा के वरिष्ठ नेता सरदार एस. पी. सिंह ने दिल्ली में पूर्व केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी को दिल्ली स्थित आवास पर जाकर ईद की मुबारकबाद दी और सभी देशवासियों की खुशहाली व देश में साम्प्रदायिक सौहार्द की दुआ माँगी। इस अवसर पर मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि यह त्यौहार कुर्बानी का त्यौहार है, हम सभी को भी राष्ट्रहित में कुछ न कुछ सहयोग करना चाहिए। वैश्विक संकट के दौर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत को काबिल सरकार और कार्यकुशल नेतृत्व मिला है, जो संकट में संकटमोचक बना है। वर्तमान वैश्विक संकट में भी सरकार व समाज पूरे संयम, समझदारी और सावधानी से भारत को वैश्विक संकट के %बिना बुलाए मेहमान% से भी मुक्ति दिलाएगी।

।। उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो...।।

मौत शाश्वत है। जिन्दगी नश्वर । जो इस धरा पर आया है , उसका एक-न-एक दिन जाना तय है। लेकिन कुछेक लोगों का जाना समाज और राष्ट्र को देर तक कचोटता है। कुछ ऐसा ही लगा 20वीं सदी के मकबूल शायर डॉ.बशीर बद्र के जाने पर। उनके निधन के साथ ही उर्दू अदब की एक ऐसी आवाज खामोश हो गई , जिनके गजल को आम लोगों की भाषा और भावनाओं से जोड़ दिया था। बशीर का नाम उन शायरों में शुमार किया जाता है , जिन्होंने उर्दू गजल को पारंपरिक दायरों से निकालकर आधुनिक संवेदनाओं और भावनाओं से जोड़ा। उनकी शायरी में भाषा की मिठास, रिश्तों की नमी और जीवन की तल्ख सच्चाइयों का अद्भुत संगम दिखाई देता है। यही वजह रही कि उनकी गजलें केवल उर्दू जानने वालों तक सीमित नहीं रहीं बल्कि हिन्दी और अन्य भाषाओं के पाठकों और श्रोताओं के बीच बेहद लोकप्रिय हुईं। 15 फरवरी 1935 को अयोध्या की उर्वरा भूमि पर जन्में बशीर की जिंदगी भी मुफलिसी भरी रही लेकिन उन्होंने साहित्य और शिक्षा से कभी नाता नहीं तोड़ा। आजादी के बाद उर्दू गजल का आलोचनात्मक अध्ययन में पी-एचडी की उपाधि धारण कर व्याख्याता की नौकरी की लेकिन निरन्तर रचनाधर्मिता विभिन्न पहलुओं पर करते रहें। रोमांस - कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूं ही कोई बेवफा नहीं होता , व्यवस्थागत खामियां- लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में , तुम तरस नहीं खाते बस्तियां जलाने में , इंसानी जज्बातों - कोई हाथ न मिलाएगा जो गले मिलो तपाक से , ये नए मिजाज का शहर है , जरा फासले से मिला करो। खैर ! बशीर बद्र इस दुनियां को अलविदा कहक हैं लेकिन उनकी शायरी आने वाली पीढ़ियों के लिए मोहब्बत , इंसानियत और संवेदनाओं की रोशनी बनकर जीवित रहेगी। हम और आप उनके अल्फाज को गुनगुनाते रहेंगे।

डॉ.हर्ष वर्द्धन कुमार, टिप्पणीकार पटना बिहार मो- 9334533586

1 को किसानों के संग प्रधानमंत्री की मन की बात

बालाघाट। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बहुप्रतीक्षित मन की बात कार्यक्रम का श्रवण आगामी अंतिम रविवार 31 मई को विशेष तौर पर किसानों संग देखा और सुना जाएगा। भारतीय जनता पार्टी ने इस दिशा में संगठनात्मक व्यवस्था के अंतर्गत जिले के 1785 बूथों में इस आयोजन को वृहद रूप देने की व्यापक तैयारी शुरू की है। जहां संगठन के प्रत्येक कार्यकर्ता इस कड़ी में जुड़ेंगे वहीं भाजपा किसान मोर्चा भी इस अवसर पर प्रमुख हिस्सा बनेगा। तारतम्य में कल जिला भाजपा कार्यालय में भाजपा किसान मोर्चा की एक अति आवश्यक बैठक भाजपा जिलाध्यक्ष, पूर्व मंत्री रामकिशोर नानो कावरे, किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष राजेश पंवार, कल्पना मर्सकोले, प्रदेश कोषाध्यक्ष संदीप सिंह रघुवंशी, जिला उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह मोहरे के प्रमुख आतिथ्य और किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष यशवंत लिल्हारे की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जहां इस महत्वपूर्ण क्षण में अधिक से किसानों की भागीदारी सुनिश्चित करने की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। साथ विधानसभा, मंडल, शक्ति केन्द्र और बूथ वार कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक डा बी एल पटले, राकेश बनोटे, डा अक्षय कटरे, राजकुमार लिल्हारे, शंकर लिल्हारे, दिपिका बिसेन, ज्योति वारेकर सहित बड़ी संख्या में भाजपा किसान मोर्चा के पदाधिकारियों ने अपनी सहभागिता दी। आशय की जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी हेमेंद्र क्षीरसागर ने दी।

तेरह चौदह साल की उम्र में लिखी मेरी कविता दीपक 29 मई 2026 को प्रसिद्ध अखबार इंदौर समाचार में छपी है। पंचकठिया ,बरहेट जिला साहिबगंज, झारखंड से सफर..। कभी सोचा भी नहीं था कि जो कुछ लिखते हैं वह कभी छपेगी भी। बाल भारती,पराग, चंदा मामा और नंदन पत्रिकाएँ मेरे स्कूल में आती थीं। मध्य विद्यालय पंचकठिया में प्रधानाध्यापक के पद पर श्री राजेंद्र कुमार सिंह ने योगदान किया था संभवत: 1966 में। वे ग्रेजुएट थे और भागलपुर के ताड़र के रहने वाले थे। इसके पहले अधिकतर शिक्षक मैट्रिक या इंटर पास हुआ करते थे।

सपरिवार स्कूल परिसर में ही रहने लगे। ग्रामीणों से सीधा संपर्क रखते थे।अनुशासनप्रिय और कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक के रूप में आपकी छवि थी। सुदूर देहाती क्षेत्रों से भी गरीब आदिवासी छात्र छात्राएँ इस मध्य विद्यालय में पढ़ने आते थे।उन दिनों हर ग्राम में स्कूल नहीं थे, शिक्षा के प्रति लोगों का झुकाव भी नहीं था। समाज में गरीबी थी। आज की तरह बच्चों को मिड डे मिल,ड्रेस,साइकिल और छात्रवृत्ति नहीं मिलती थी। शायद छठी से ही शिक्षण शुल्क और परीक्षा शुल्क भी लिया जाता था। बहरहाल श्री राजेंद्र बाबू ने अपने प्रयास से विद्यालय का कायाकल्प कर दिया था। जनता की सहायता से दो कमरे

संस्मरण

का निर्माण कराए थे। मिट्टी के मकान और फूस की छावनी। पहले एक बड़ा मकान था जिसमें तीन कमरे थे। खपरैल का मकान था प्रखंड के श्रेष्ठ स्कूलों में पंचकठिया मध्य विद्यालय का नाम था। इस स्कूल में पंचकठिया बाजार के अलावा पंचकठिया संथाली,बाबूपुर, रकसी,भैरोठाप,हरिश्चंद्रपुर, खिजुरखाल, महुआटाँड़ आदि गाँवों से वंचित वर्ग के बच्चे भी पढ़ने आते थे। संभवतः 1970 तक बिहार में सातवीं कक्षा में बोर्ड की परीक्षा देनी पड़ती थी। मैंने 1969 में सातवीं की बोर्ड की परीक्षा दी थी। मुझे याद है श्री राजेंद्र बाबू की प्रेरणा से ही मैंने गांधी जी पर लिखा छोटा सा आलेख बाल भारती पत्रिका में छपने हेतु भेजा था। आज जब देश विदेश के अखबारों तथा पत्रिकाओं में खूब लिखता हूँ तो कहीं न कहीं इसके पीछे मेरे कुछ शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है।उन महान शिक्षकों की प्रेरणा और मदद नहीं मिली होती तो पिछड़े क्षेत्र में बचपन और जीवन का पूर्वार्द्ध बिताने वाले निर्मल को लिखने का साहस नहीं होता।लेखन के प्रति इतना झुकाव नहीं होता।अपनी प्रतिभा को निखारने का मौका नहीं मिला होता। लगभग पचास साल पहले एक पतली - सी अध्यास पुस्तिका में मैंने आठ या दस कविताओं को फेर कर लिख रखा है। इन कविताओं का निर्माण काल भी उल्लेख है।अपनी लिखी कविताओं के आधार पर मुझे अपना माइंडसेट,अपना शौक और अपनी वैयक्तिक रुचि की झलक देखने को मिलती है।

निर्मल कुमार दे, पंचकठिया बरहेट साहिबगंज झारखंड